नृत्य कथक –कोड 056
अंकन योजना (संशोधित)
कक्षा–XII(2025 -26)

समय – 2 घंटे **अधिकतम अंक – 30**

सामान्य निर्देश:

- निम्नलिखित निर्देशों को ध्यान से पढ़ें।
- इस प्रश्न पत्र में कुल 15 प्रश्न हैं, जिनमें आंतरिक विकल्प शामिल हैं।
- **खंड- क** में 8 प्रश्न बहुविकल्पीय हैं, जिनमें प्रत्येक 1 अंक का है।
- **खंड- ख** में 5 प्रश्न छोटे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 2 अंक का है।
- **खंड- ग** में 2 प्रश्न लंबे उत्तर वाले हैं, जिनमें प्रत्येक 6 अंक का है।

क्र.सं.	खंड– क	अंक
1	a.	1
2	c.	1
3	c.	1
4	d.	1
5	d.	1
6	a.	1
7	a.	1
8	a.	1
	खंड– ख	
9	नाट्यधर्मी की व्याख्या: नाट्यधर्मी भारतीय शास्त्रीय नृत्य और रंगमंच में भावों और क्रियाओं की शैलीबद्ध तथा नाटकीय प्रस्तुति को कहते हैं। इसमें जटिल भावनाओं और कथानक को निर्धारित मुद्राओं, गतियों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। या ताल की व्याख्या: ताल भारतीय संगीत और नृत्य में लय या समय चक्र को कहते हैं। कथक नृत्य में कलाकार विशेष तालों का पालन करते हैं, जैसे — तीनताल (16 मात्राएँ) या झपताल (10 मात्राएँ), जिनके आधार पर लयात्मक गतियाँ और संरचनाएँ बनाई जाती हैं।	2
10	कहरवा ताल (Kaharwa Taal) : मात्राएँ: 8 (4 + 4) स्वभाव: सरल और सीधी लय, गाने व नृत्य दोनों में लोकप्रिय। प्रयोग: लोकगीत, भजन, हल्के-फुल्के गीत, नृत्य-संगीत। ठेका: धा गे ना ति । ना क धि ना या दादरा ताल (Dadra Taal): मात्राएँ: 6 (3 + 3) स्वभाव: मधुर और नाजुक लय, भावपूर्ण रचनाओं में प्रयुक्त। प्रयोग: ठुमरी, दादरा, ग़ज़ल, भावगीत और लोकसंगीत। ठेका: धा धिन ना | धा तिन ना	2

11	"कथक नृत्य में प्रस्तुति का आरम्भ ईश्वर, गुरु और दर्शकों को प्रणाम कर भावपूर्ण ढंग से किया जाता है, जिसे वंदना कहते हैं।"कथक नृत्य में वंदना का विशेष स्थान है। किसी भी प्रस्तुति की शुरुआत वंदना से की जाती है। इसमें नर्तक/नर्तकी सर्वप्रथम ईश्वर, गुरु और दर्शकों को प्रणाम करता है। इसे "मंगलाचरण" भी कहा जाता है। या तिहाई की परिभाषा: तिहाई भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य में प्रयुक्त एक लयात्मक वाक्यांश या पैटर्न है, जिसे तीन बार दोहराया जाता है। इसका प्रयोग प्रायः किसी रचना या प्रस्तुति को समाप्त करने के लिए किया जाता है, जिससे एक नाटकीय प्रभाव उत्पन्न होता है। कथक नृत्य में तिहाइयाँ विशेष महत्व रखती हैं, क्योंकि वे प्रस्तुति में जटिलता और आकर्षण जोड़ती हैं।	2
12	परन: पखावज जैसे वाद्ययंत्रों से प्राप्त बोलों (शब्दांशों) का उपयोग करके एक लयबद्ध रचना, जिसे शक्तिशाली पदचिह्नों के साथ बजाया जाता है और अक्सर सम (पहली ताल) पर समाप्त होता है। कवित: एक लयबद्ध काव्य रचना, जिसमें बोलों को छंदों के साथ मिलाकर कहानी सुनाई जाती है या हाव-भाव और भावों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। या तोड़ा: जटिल बोलों (शब्दांशों) से बनी एक लंबी लयबद्ध रचना जो अक्सर एक पूर्ण लयबद्ध चक्र को बताती है, जो आमतौर पर सम (पहली ताल) पर समाप्त होती है। टुकड़ा: एक छोटी लयबद्ध रचना, आमतौर पर बोलों का एक छोटा खंड, जिसे सटीक पदचिह्नों के साथ बजाया जाता है और जो सम पर समाप्त होता है। मुख्य अंतर उनकी लंबाई और जटिलता है - तोड़ा अधिक विस्तृत है, जबकि टुकड़ा संक्षिप्त है।	2
13	गत भाव: गत भाव में नर्तक दो या दो से अधिक पात्रों को आधे-अधूरे भाव से चित्रित करता है। इस भूमिका को विभिन्न गतों जैसे माखन चोरी, घूँघट, मुरली, मटकी के अंतर्गत सामान्यीकृत किया जाता है। गत निकास: गत का अर्थ है गति,या चाल (चलना) और निकास का अर्थ है "बाहर आना" (यह एक फ़ारसी शब्द है)। जब कोई नर्तक कुछ गत-पलट लेता है और मुरली (बांसुरी), घूँघट, मटकी आदि जैसी मुद्रा में बाहर आता है और फिर चलने के विभिन्न सुंदर तरीके दिखाता है, तो उसे गत-निकास कहा जाता है। या जब कोई व्यक्ति दूसरे लोगों की भावनाओं के कारण अभिभूत होता है, तो उन भावनाओं से अभिभूत होना "सत्व" कहलाता है। इसलिए, जब इन भावनाओं का अभिनय में अनुवाद किया जाता है, तो इसे सात्विक अभिनय कहा जाता है। सात्विक अभिनय के आठ प्रकार हैं: स्तंभ (स्तब्ध हो जाना), प्रलय (बेहोश होना), रोमांच (रोंगटे खड़े हो जाना), स्वेद (पसीना आना), वैवर्ण (चेहरे का रंग बदलना), वेपथु (हाइपरवेंटिलेशन), अश्रु (आंखों में आंसू आना), वैश्विर्य (आवाज में बदलाव) - इन भावनाओं को सफलतापूर्वक प्रदर्शित करना सात्विक अभिनय के रूप में जाना जाता है।	2

	खंड– ग	
14	रस प्रदर्शन कला का मुख्य आधार हैं, जो मानव जीवन के विभिन्न चरणों को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। रस की स्थिति भाव के कारण स्थापित होती है जो भावना का कारण है। नवरस नृत्य को संपूर्णता प्रदान करते हैं। 'नव' का अर्थ है नौ और 'रस' का अर्थ है भावनाएँ। प्रयुक्त 9 रसों के नाम हैं: 1. श्रृंगार - स्थायी भाव रति है। 2. हास्य - स्थायी भाव ही हास है। 3. वीर - स्थायी भाव उत्साह: है। 4. वीभत्स - स्थायी भाव जुगुप्सा है। 5. रौद्र - स्थायी भाव क्रोध है। 6. भयानक - स्थायी भाव भय है। 7. अदभुत - स्थायी भाव विस्मय है। 8. करुण-स्थयी भाव शोक है। 9. शान्त-स्थयी भाव शम/निर्वेद है। या आमद कथक प्रदर्शन का पहला भाग है, और यह एक लयबद्ध प्रवेश आंदोलन है जो नर्तक के मंच पर आने का संकेत देता है। यह नटवारी बोलों से बना है, जो कथक नृत्य के मूल शब्दांश हैं। सीखी गई आमद का तीन ताल में उच्चारण लिखें	6
15	अभिनय कथक नृत्य का एक प्रमुख पहलू है जिसमें प्रदर्शन की भावनाओं और कहानी को व्यक्त करने के लिए हाव-भाव, चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा का उपयोग शामिल है 1. अंगिका: शरीर, जिसमें हाथ की हरकतें, चेहरे के भाव और मुद्राएँ शामिल हैं। 2. वाचिका: आवाज़, जिसमें शब्द और काव्य शामिल हैं। 3. आहार्य: वेशभूषा, मेकअप और दृश्य 4. सात्विक: मानसिक स्थिति या आंतरिक भावना अपने दृष्टिकोण से सबसे कठिन अभिनय लिखें। या ताली और खाली का महत्त्व 1. **ताली का महत्त्व** ताली ताल के उन स्थानों पर दी जाती है जहाँ लय का बल होता है। यह ताल के प्रमुख विभाजन (सम, दूसरी, तीसरी आदि) को स्पष्ट करती है। ताल का ढांचा और लय का प्रवाह ताली से अधिक स्पष्ट और सशक्त हो जाता है। 2. **खाली का महत्त्व** खाली ताल में उस स्थान को कहते हैं जहाँ बल नहीं होता। इसे हाथ को हिलाकर या उंगलियों से इशारा करके दिखाया जाता है। खाली ताल में विविधता लाती है और लय को संतुलित बनाती है। ताली और खाली में अंतर 1. ताली ताल में बल का प्रतीक है, जबकि खाली अबल (निर्बल) का। 2. ताली बजाकर दिखाई जाती है, जबकि खाली हाथ को हिलाकर दर्शाई जाती है। 3. ताली से ताल का ढांचा मज़बूत और स्पष्ट होता है, जबकि खाली ताल में हलकापन और विविधता लाती है।	6 3 3